उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
दिगंत-भाग-2- काव्यखंड
शीर्षक- 'कड़बक'
कवि - 'मलिक मुहम्मद जायसी'

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न:- 'रकत का लेई' का क्या अर्थ है?

उत्तर:- प्रस्तुत पद में कवि ने लेई के रूपक से यह बताने की चेष्टा की है कि उसने अपने कथा के विभिन्न प्रसंगों को किस प्रकार एक ही सूत्र में बाँधा है। कवि कहता है कि मैंने अपने रक्त की लेई बनायी है अर्थात् कठिन साधना की है। यह साधना प्रेमरूपी आँसुओं से अलंकृत की गई है। कवि का व्यंग्यार्थ है कि इस कथा की रचना उसने कठोर सूफी साधना के फलस्वरूप की है और फिर इसको अपने प्रेमरूपी आँसुओं से विशिष्ट आध्यात्मिक विरह द्वारा पुष्ट किया है। लौकिक कथा को इस प्रकार अलौकिक साधना से परिपुष्ट करने का कारण भी जायसी ने अपनी काव्य कृति के द्वारा लोक जगत में अमरत्व प्राप्ति की प्रबल इच्छा बताया है।

प्रश्न :- कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है?

उत्तर:- महाकवि जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसलिए की है कि दर्पण जिस प्रकार स्वच्छ और निर्मल होता है ठीक उसी प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता और पारदर्शिता का प्रतीक है। एक आँख से अन्धे होकर भी कवि काव्य-प्रतिष्ठा से युक्त है। अतः वह पूजनीय है। कवि अपनी निर्मल वाणी द्वारा सारे जनमानस को प्रभावित करता है जिसके कारण सभी लोग कवि की प्रशंसा करते हैं और नमन करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ
07/08/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'गोदान' उपन्यास
लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न:- घटना प्रधान उपन्यासों का वर्णन करें।

उत्तर: उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के पूर्व हिन्दी में घटना प्रधान उपन्यासों का विशेष महत्व था। घटना प्रधान उपन्यासों में तिलिस्मी- ऐयारी, जासूसी और अद्भुत घटना प्रधान उपन्यास हैं। तिलिस्म शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ 'इन्द्रजाल' है। तिलिस्म बाँधने में बड़े-बड़े तांत्रिकों और गुणियों की सहायता ली जाती थी। ऐयारी तिलिस्म तोड़ने में कुशल व्यक्तित्व कहा जाता है। इन तिलिस्मी ऐयारी उपन्यासों के प्रवर्तक बाबू देवकीनन्दन खत्री थे। इन्होंने 1888ई में चन्द्रकान्ता उपन्यास लिखा था। इसके 24 भाग हैं। इस उपन्यास की इतनी अधिक लोकप्रियता हुई कि सैकड़ों युवकों ने इसे पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी थी। जासूसी उपन्यासों में गोपाल राम गहमरी ने 'हीरे की चोरी' उपन्यास की रचना की जो बंगला उपन्यास का अनुवाद था। अद्भुत घटना प्रधान उपन्यासों में रोमांचकारी रहस्यों को अपने में समेटने वाले उपन्यास थे। इनमें निहालचन्द वर्मा का 'प्रेतकाफल' प्रसिद्ध है।

प्रश्न:- हिन्दी उपन्यास के प्रति मुंशी प्रेमचन्द का क्या दृष्टिकोण था?

उत्तर:- मुंशी प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार थे। वे साहित्य को समाज का दर्पण मानते हुए उसे दीपक बनाने के समर्थक थे। इसीलिए उन्होंने अपने समाज की ज्वलन्त समस्याओं को अपने उपन्यासों की विषय- वस्तु बनाया है। उस समय राष्ट्रीय भावना एवं स्वतंत्रता आन्दोलन जोरों पर था। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन का जादुई असर छात्रों, वकीलों, सरकारी कर्मचारियों तथा आम जनता पर था। इसी भावना को लेकर प्रेमचन्द जी ने प्रसिद्ध उपन्यास कर्मभूमि की रचना की।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुलतानगंज, पूर्णियाँ।
07/08/20

Date: ________ Page: ______

देश में आया था लेखक का कहना है कि आधुनिक युग में भी एक वैसी ही भुवन मोहिनी ने भारत में प्रवेश किया। यह एक भारी संकट था। यह सभ्यता का संकट था जो समुद्र पार से आया था। यह संकट समुद्र पुत्री पश्चिमी सभ्यता थी।

बंगाल प्रतापी वीरों की धरती रहा है। यहाँ अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए खुदीराम जैसे बच्चे भी खेल-खेल में आजादी के लिए बम फेंका करते थे। बंगाल की भूमि रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुभाषचन्द्र बोस, ईश्वरचन्द्र विद्या-सागर, राम कृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की मातृभूमि है।

लेखक का विश्वास है कि हर संकटों में त्राण दिलाने वाली इस बंग भूमि में ही किसी दिन इस सागर के तीर पर महामानव नारायण का अवतार हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
०५।०७।२०

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

निबंध माला

शीर्षक :- 'महा-मानव-सागर-तीरे'

लेखक :- डॉ० रमाकान्त पाठक

प्रश्न :- 'महा-मानव-सागर-तीरे' डॉ० रमाकान्त पाठक के विचारात्मक निबंध के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- डॉ० रमाकान्त पाठक हिन्दी भाषा और साहित्य के महान विद्वान हैं। गद्य एवं पद्य दोनों ही में इनकी समान गति है। एक तरफ जहाँ पाठक जी अपनी कविताओं में प्राचीन आख्यान के मूल्यों का वर्तमान के सन्दर्भ में पड़ताल करने का दुःसाहसिक प्रयत्न करते हैं, वहीं इनके निबंधों में पौराणिक कथाओं की आधुनिक व्याख्या, इनकी रचनाओं को अधिक आकर्षक बनाए रखती है।

'महा-मानव-सागर-तीरे' पाठक जी का एक विचारात्मक निबंध है। इस में निबंधकार ने सम्पूर्ण भारत के प्रसंग में बंगाल की महिमा का गौरवपूर्ण मूल्यांकन किया है।

बंगाल यद्यपि भारत का एक प्रान्त है, तथापि इसे देश का एक छोटा प्रतिरूप कहा जा सकता है। अतिदि काल से ही हमारे प्राचीन ग्रन्थों में इसकी महिमा का उल्लेख है। इसके पावन तीर्थ 'गंगासागर' को देखकर ही जहाँ व्यास जी ने गीता को 'स्थित प्रज्ञता' की कल्पना की होगी। महासागर एवं हिमालय की ऊतुंग चोटियों को देखकर ही वाल्मीकि ने अपने 'राम' का स्वरूप स्थिर किया होगा। हिन्दुस्तान को छोटे रूप में देखना हो तो बंगाल की राजधानी में प्रवेश कीजिए। पूरा भारत आपको इस आईने में दिखाई पड़ेगा। बंगसागर में स्थित तीर्थों में मिलने के लिए ही गंगा को हिमालय से निकलकर धरती पर आना पड़ा था।

बंगाल सदैव से ही भारतीय मेधा, हिन्दुस्तानी संस्कृति, राष्ट्र के गौरव और तेजबल का प्रतीक रहा है। मिथिला में राजा जनक गृहस्थ होकर भी संन्यासी थे। देह धारण कर के भी विदेह थे। इन्होंने मद को जीत लिया था।

समुद्र पार दानवों की स्वर्णपुरी थी। आदि कवि वाल्मीकि ने लिखा है कि कभी वहाँ से समुद्र लांघकर एक कपट सुन्दरी, एक स्वर्ण मृग तथा एक मायावी मुनि हमारे

शेष आगे—